Volume-1, No.2 Aug.-2014, pp.103-105

जनपद बहराइच के जूनियर हाईस्कूलों में अध्ययनरत सामान्य एवं अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की मानसिक योग्यता का एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 श्याम कुमार चौधरी, प्रवक्ता शिक्षा शास्त्र विभाग
महिला पी.जी. कालेज, बहराइच उत्तर–प्रदेश भारत।

बलिकाओं की शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य उनका सर्वांगीण विकास करना है। सर्वांगीण विकास हेतु उन्हे शरीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए उपयुक्त समय में उचित अवसर प्रदान कर उनकी अभिरूचियों एवं अभिवृत्तियों को ऐसे ढ़ग से संस्कारित करें कि उनके व्यक्तित्व में मानवीयता, राष्ट्रीयता एवं कर्तव्य के प्रति निष्ठावान जैसे गुणों का समावेश स्वतः हो सके। शिक्षा के माध्यम से ऐसे संस्कार डाले जाने चाहिए कि बालिकाएं कालान्तर में अर्थ प्राप्ति को सर्वोपरि समझकर निन्दनीय व्यवसाय जैसे कृत्यों में सल्लगन न हो। बालिका शिक्षा का आधार भूत लक्ष्य उन्हें पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय कर्तव्यों को वहन करने में दक्ष बनाते हुए उसमें विद्यमान स्नेह सेवा, करूणा, त्याग आदि उनकी जन्मजात स्वाभाविक भावनाओं का उत्कृष्ट विकास करना है। वे शिक्षा के माध्यम से प्राप्त इन आर्दश गुणों को व्यवहारिक जीवन में प्रविष्ट होने पर अनुकरणीय गृहणी और सुयोग्य मां मानव समाज की सेवा के व्रत के साथ–साथ राष्ट्रीय नागरिक के रूप में अपने कर्तव्य व व्यक्तित्व द्वारा राष्ट्र को गौरवान्वित करने का सफल प्रत्यत्न कर सकें।

बलिकाओं को शिक्षा का अधिकार प्रदान करना सभी बच्चों की सुरक्षा और संरक्षण का सेतु है। 20वीं सदी के इस अधूरे काम का बोझ अपने कंधो पर लादे हुए हम 21वीं सदी में और आगे नही बढ़ सकते हैं। देश की आर्थिक व सामाजिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है की देश के सभी नागरिकों का समान विकास तथा उन्नति हो लेकिन आज तक शिक्षा सहित सभी क्षेत्रों में अनुसूचित जनजातियॉ उपेछित हैं। जिनमें से एक प्रमुख समस्या शिक्षा की कमी है।

केन्द्रीय व प्रान्तीय सरकारों तथा गैर सरकारी सेवा संस्थाओं, समाज कल्याण विभाग के द्वारा अनेक कार्यक्रम जनजातियों के विकास के लिए चलाये जा रहे है। अनेक अधिनियम व प्रस्ताव पारित किये गये है। उन्हें विभिन्न प्रकार की सुविधाएं देने की व्यवस्था की गयी है। फिर भी आज तक उन्हें पूरी तरह से देश की प्रगति के साथ नही जोड़ा जा सका हैं।

उत्तर प्रदेश जहॉ केवल दो जनजाति बुक्सा व थारू निवास करती है वही जनपद बहराइच में केवल थारू जनजाति निवास करती है। शिक्षा के प्रसार व संचार के साधनों के विकास के फलस्वरूप इस समाज का सम्पर्क धीरे–धीरे जनजातिय समूहों व समाज से होने लगा है। जनपद बहराइच की साक्षरता दर प्रदेश में सबसे कम है तथा यहां महिला सक्षारता की स्थिति बहुत ही दयनीय है। थारू बालिकाओं की स्थिति तो अति चिन्ताजनक है। जनपद की साक्षरता व भौगोलिक स्थिति को देखते हुए इस जनपद के निवास के लिए विशेष प्रयास की आवश्यकता है।

जनजातिय विधार्थियों की मानसिक योग्यता का अध्ययन विभिन्न विद्वानों ने किया है जिसमें मिश्रित फल प्राप्त हुए है। कुछ अनुसंधान कर्ताओं ने बौद्धिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धियों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध प्राप्त किया (देशमुख 2000, संगीता 2000; भूषन 2004; सिंह 2006) कुछ अनुसंधानकर्ताओं ने मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन भी किया है नोमनी (1964) में ईसाई व गैर ईसाई बालकों की स्थूल बुदि और अग्रवाल (1962) ने अनुसूचित एवं अनुसूचित जनजाति के बालकों के बौदिक स्तर में अन्तर प्राप्त किया। इसी प्रकार जय प्रकाश (1972) एवं मूर्ति तथा चन्द्र (1987) ने अनुसूचित जनजाति से अन्य छात्रों ने उच्च बुद्वि प्राप्त की थी। रावत (1991) ने लिंग के आधार पर जनजातियें बालकों की बुद्वि में कोई अन्तर नही पाया था।

उपर्युक्त अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य जाति की मानसिक योग्यता की तुलना का क्षेत्र अभी तक उपेक्षित रहा है अतः

इस अनुसंधानकर्ता को यह बल मिला की अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य बालिकाओं की मानसिक योग्यता का एक तुलनात्मक अध्ययन करना आवश्यक है। इस प्रकार वर्तमान अध्ययन का शीर्षक है; "जनपद बहराइच के जूनियर हाईस्कूलों में अध्ययनरत सामान्य एवं अनुसूचित जनजातियों की बालिकाओं की मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन"।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. जूनियर हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जनजति की बालिकाओं की मानसिक योग्यता का स्तर ज्ञात करना।
2. जूनियर हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत् सामान्य जाति की बालिकाओं का मानसिक स्तर ज्ञात करना।

3. जूनियर हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत् सामान्य व अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की मानसिक योग्यता की तुलना करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. जूनियर हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की मानसिक योग्यता स्तर सामान्य है।"
2. जूनियर हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत् सामान्य जाति की बालिकाओं की मानसिक योग्यता का स्तर सामान्य है।
3. जूनियर हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य जाति की बालिकाओं के मानसिक योग्यता स्तर में सार्थक अन्तर नही है।

शोध विधि :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में नार्मैटिव सर्वे विधि का प्रयोग किया गया है। इस शोध अध्ययन में जनपद बहराइच के अन्तर्गत आने वाले सभी जूनियर हाई स्कूलों को जनसंख्या के अन्तर्गत रखा गया है। जनसंख्या से न्यादर्श का चयन स्तरीकृत यादिच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है। जनपद बहराइच की स्कूल जाने वाली बालिकाओं की जनसंख्या से 50 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं का अध्ययन किया गया इस प्रकार अनुसूचित जनजाति की 130 बालिकाओं का चयन न्यादर्श में किया गया। सामान्य जाति की 130 बालिकाओं का चयन भी इसी आधार पर न्यादर्श में किया गया। वर्तमान अध्ययन में मानसिक योग्यता ही एकमात्र चर था जिसके परीक्षण हेतु मोहसिन (1990) के सामान्य बुद्वि की जांच नामक परीक्षण का प्रयोग किया गया। जांच तथा पुर्नजांच विधि के आधार पर इस परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक 0.89 था इस आधार पर यह परीक्षण विश्वसनीय एवं बैध पाया गया।

प्रयुक्त सांख्यकीय विधियां

वर्तमान अध्ययन में मध्य मान, मानक विचलन तथा क्रान्तिकमान की गणना की गयी है।

आकड़ों का विश्लेषण तथा निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन के उद्देश्य कि बहराइच के जूनियर हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत् सामान्य जाति एवं अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की मानसिक योग्यताएं क्या है और उनमें क्या अन्तर है ? इन तथ्यों की जाचं करने के लिए विभिन्न विद्यालयों से सामान्य जाति एवं अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की सामान्य बुद्वि की जांच की गयी और आकड़े प्राप्त किये गये इन आकड़ो को सामान्य जाति एवं अनुसूचित जनजाति में अलग–अलग वर्गीकृत किया गया और उनमें मध्यमानों, मानक विचलन तथा क्रान्तिकमान की गणना की गयी, जिन्हें निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका

अनुसूचित जनजाति तथा सामान्य जाति की बालिकाओं की मानसिक योग्यता का मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात।

बालिकाएं	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिकमान
अनुसूचित जनजति	130	97.12	21.8	
सामान्य जाति	130	99.8	24.31	0.915

सार्थक नहीं।

उपर्युक्त सारणी से यह प्रदर्शित होता है कि अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की मानसिक योग्यता का मध्यमान 97.12 तथा मानक विचलन 21.8 है। सामान्य जाति की बालिकाओं के लिए मानसिक योग्यता का मध्यमान 99.8 और मानक विचलन 24.31 है। इन मध्यमानों को देखने से यह प्रतीत होता है कि सामान्य बालिकाओं से 2.68 अधिक है सामान्य जाति एवं अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की मानसिक योग्यता के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए दोनो समूहों के मध्यमान एवं मानक विचलन से क्रान्तिमान की गणना की गयी और यह मान 0.915 प्राप्त हुआ चूंकि 0.05 स्तर पर सारणी का क्रान्तिमान 1.97 है। वर्तमान अध्ययन में प्राप्त क्रान्तिमान (0.915) सारणी का मान (1.97) से कम है इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकार कर ली गयी। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि जूनियर हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति की बालिकाओं की मानसिक योग्यता लगभग समान है और उनमें कोई सार्थक अन्तर नही है।

व्याख्या

जनजातिएं के बालकों की मानसिक योग्यता का अध्ययन विभिन्न शोधार्थियों ने किया है। रावत (1991) ने माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् भूटिया जनजाति के छात्र एवं छात्राओं के सामान्य मानसिक योग्यता में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नही किया था। इसी प्रकार बेज (1991) में अपने अध्ययन में आदिवासी तथा अनुसूचित जनजाति समूहों में सामान्य बुद्धि में कोई असर प्राप्त नही किया था। जबकि विजय प्रकाश (1972) में एक अध्ययन में ग्रामीण जनजाति बालकों की अपेक्षा शहरी छात्रों में उच्च बुद्धि पायी थी

इसी प्रकार मोती तथा चन्द्र (1987) में अनुसूचित जाति जनजाति और गैर अनुसूचित जनजाति समूहों के मानसिक योग्यता के बीच अन्तर प्राप्त किया था।

उपर्युक्त अध्ययनों के निष्कर्षों से वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षों को समर्थन प्राप्त होता है जबकि कुछ निष्कर्ष वर्तमान अध्ययन के विपरीत जान पड़ते है। अतः इस क्षेत्र में जनजाति बाहुल्य क्षेत्रों से बड़े न्यादर्श प्राप्त करके ठोस निष्कर्ष प्राप्त करने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. **जय प्रकाश (1972)** "ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ अर्बन, रूलर एण्ड ट्राइबल हायर सेकेण्डरी स्टूडेन्ट्स ऑफ मध्य प्रदेश विश रेफरेन्स टू देयर इनटरेस्स पैटर्नस" मनोविज्ञान, पी.एच.डी. सागर विश्व विद्यालय।
2. **नोमानी, एच.आर. (1964)** "ए कम्पेरटिव स्टडी ऑफ कानक्रीट इन्टेलीजेन्स ऑफ दि किश्चयन एन्ड नॉन क्रिश्चयन मुन्डा स्कूल ब्वायज एन्ड गर्ल्स ऑफ खुन्ती, "दि बिहार ट्राइबल रिसर्च इंटीट्यूट।
3. **बेज, जय प्रकाश (1991)** "ए कम्परेटिव स्टडी बिटवीन दि स्टूडेन्स विलांगिग टू शेड्यूलल्ड कास्टड एण्ड शेड्यूल ट्राइब्स इन्कलूडिंग दि लोधास आन जनरल इंटेजीजेन्स एन्ड क्रीएटिविटी, इन फिथ सर्वे एजूकेशन रिसर्च, वाल्यूम प्रथम एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
4. **भुरान, बी (2004)** कोरिलेटिव एण्ड प्रेडिक्टिव वाल्यू ऑफ इन्टेलीजेन्स टेस्ट इन अचीवमेंन्ट एट सेकेण्डरी स्टेज" एशियन जर्नल ऑफ साइकोलोजी एण्ड एजूकेशन, वाल्यूम – 37, अंक–3,4, पृष्ठ 31–36।
5. **मूर्ती वेंकेटेश, सी.जी. एवं सुभाष चन्द्र (1987)** ए स्टडी ऑफ इन्टेलीजेन्स, सोश्यों – इकोनॉमिक स्टेट्स एण्ड ऑडर अमंग शेड्यूलल्ड कास्ट/शेड्यूल ट्राइब एण्ड नान शेड्यूल कास्ट, नान शेड्यूल ट्राइब ग्रुप्स," इन–फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशन रिसर्च, वाल्यूम–1, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली।
6. **रावत, केदार सिंह (1991)** "पिथौरागढ़ जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् जातिय एवं जनजातीयें (भोटिया) विद्यार्थियों की सामान्य मानसिक योग्यता व्यवसायिक अभिलाशा एवं रूचि प्रतिमान का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में एक तुलनात्मक अध्ययन पी.एच.डी., शिक्षा शास्त्र, कुमायूं विश्व विद्यालय नैनीताल।
7. **ब्यास, कौशल चन्द्र (1999)** "बालिका शिक्षा : लक्ष्य एवं स्वरूप प्राथमिक शिक्षक अक्टूबर, पृष्ठ – 45–47।"
8. **बागहये, बी.एस. (1983)** "ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ एटीटयूटस ऑफ शेड्यूल कास्ट एण्ड शेड्यूल ट्राइब प्यूपिल्स ट्रवर्डस एजूकेशन,, "इन–सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, सोसाइटी फार एजूकेशन रिसर्च एण्ड डेवलपमेंन्ट, बड़ौदा।
9. **संगीता (2000)** "छात्र छात्राओं द्वारा पसंद किये जाने वाले दूरदर्शन कार्यक्रयों का उनके बौद्धिक स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध, "लघु शोध प्रबन्ध, शिक्षा शास्त्र, लखनऊ विश्व विद्यालय।
10. **सिंह दीपिका (2006)** "प्राथमिक स्तर के विद्याार्थियों का बौद्धिक स्तर शैक्षिक उपलब्धि तथा कक्षा वातावरण के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन् "लघु शोध प्रबन्ध, शिक्षा शास्त्र, लखनऊ विश्व विद्यालय।